आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 10/12/2022; Accepted: 13/12/2022; Reviewed: 20/12/2022; Published: 24/12/2022

स्त्री जीवन के संदर्भ में 'एक स्त्री की आत्महत्या' उपन्यास

- मीनू शिवन
शोधार्थी
हिंदी विभाग
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
682022
फो. नं. 9645941278
ईमेल : samgg2114@gmail.com

मीनू शिवन, स्त्री जीवन के संदर्भ में 'एक स्त्री की आत्महत्या' उपन्यास, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022, (206-212)

शोध सार :

हिंदी, गुजराती और अंग्रेज़ी के प्रमुख लेखिका हेमांगिनी अ रानडे के प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास है – 'एक स्त्री की आत्महत्या' । इस उपन्यास में उन्होंने भारतीय स्त्री जीवन को वाणी देने का प्रयास किया है । भारतीय समाज के विभिन्न तरह से सोचनेवाली, दृष्टिकोण रखनेवाली, समस्याओं से संघर्ष करती औरतों का चित्रण इस उपन्यास का केंद्र बिन्दु है । पूरा उपन्यास अमला और कमला नामक दो पात्रों के इर्द-गिर्द घूमता है । पूरा उपन्यास अमला की दृष्टि के ज़रिये आगे बढ़ता है । उपन्यास के अन्य पात्रों से अमला को जोड़नेवाली कड़ी है कमला। लेकिन उपन्यास में वह एक मृत पात्र है । उसकी आत्महत्या के कारण की तलाश है, पूरा उपन्यास । उपन्यास के अंत तक आते-आते इसके कारण ढूँढ निकालने के साथ-साथ लेखिका ने पाठकों के सामने यह संदेश रखा है कि स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक समाज की दृष्टिकोण कभी न बदलनेवाला है । अपनी बदहाली से बचने केलिए, स्त्रियों को खुद अपनी दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना चाहिए । स्त्रियों को खुद के लिए खड़ी होनी चाहिए क्योंकि उसकी मदद केलिए ओर कोई नहीं आएगा । लेखिका भारतीय समाज के स्त्रियों के सामने यह विकल्प रखता है – अमला बनना है या कमला – खुद का निर्णय है – खुद लेना चाहिए ।

शोध आलेख :

गुजरात के एक मुस्लीम परिवार में जन्मे हेमांगिनी अ रानडे हिंदी, गुजराती और अँग्रेज़ी भाषाओं में लेखन कार्य करती आ रही है । हेमांगिनी जी की तूलिका से जन्मे प्रमुख हिंदी उपन्यास है- 'एक स्त्री की

आत्महत्या' । सन् 2005 में प्रकाशित इस उपन्यास के कुल 36 पात्रों में से, 24 से ज़्यादा पात्र स्त्रियाँ ही है । लेखिका ने इस उपन्यास में समाज के विभिन्न तबके के विभिन्न सोचवाली स्त्रियों को प्रस्तुत किया है । इसमें शिक्षित-अशिक्षित, पुराने-आधुनिक विचारों के स्त्रियों का चित्रण हुआ है । इन स्त्रियों के माध्यम से भारतीय समाज में स्त्री-जीवन और स्त्रियों के प्रति समाज के विभिन्न तरह के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालना लेखिका का उद्देश्य है। स्त्रियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास भी इस उपन्यास की विशेषता है।

इस उपन्यास में चित्रित हर एक पात्र भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास के हर एक पात्र को परस्पर जोड़नेवाली दो कड़ियाँ हैं – अमला और कमला, जिन्हें इस उपन्यास का मुख्य पात्र कहा जा सकते हैं । पूरा उपन्यास का प्रस्तुतीकरण अमला की दृष्टि में हुआ है । वह एक पत्रकार महिला है । 'महिला दिवस' विशेषांक की तैयारी केलिए, संपादक द्वारा अमला के हाथों सौंपे गये महीनों पहले की खबर के मृत नायिका है – कमला । अपनी यातनापूर्ण ज़िदगी से विवश कुछ स्त्रियाँ आत्महत्या कर लेती है तो कुछ स्त्रियाँ इसी यातनापूर्ण स्थिति पर काबू पाते हुए जीवनभर संघर्ष करते रहते हैं । अमला लड़नेवालों के प्रतिनिधि है तो कमला हार माननेवालों की । आत्महत्या करने केलिए विवश होने के बावजूद भी आत्महत्या न करनेवालों की कहानी है – 'एक स्त्री की आत्महत्या' ।

उपन्यास कमला की आत्महत्या पर छपी खबर की जड़ें तलाशती अमला की यात्रा पर केंद्रित है :- "किसी स्त्री ने किसी इमारत पर से कूदकर आत्महत्या की थी ।"[i] इस उपन्यास के हर एक स्त्री पात्र की अपनी एक कहानी है । अमला और तरंग का प्रेमविवाह हुआ था । अमला की माँ-बाबूजी की अनुमति के बिना उनका विवाह हुआ था । शादी के तुरंत बाद तरंग अमरीका चला जाता है । वहाँ अमला के साथ धोखा करते हुए तरंग एक अमरीकन महिला के साथ जीना शुरू करता है । दो साल बाद जब बिन बुलाए ही अमला तरंग के पास चली जाती है तो अपने साथ हुए धोखे से वाकिफ हो जाती है । तरंग अमला से तलाक की माँग करता है तो तलाक देने के लिए वह इनकार करती है । यह एक प्रकार से अमला की बदला ही थी । नतीजन एक दिन आधी रात को अपरिचित शहर में तरंग अमला को घर से बाहर निकाल देता है । पुराने पड़ोसी जैफ उसे बचाने केलिए आता है । इसके बदले में, तरंग जैफ और अमला के बीच अवैध संबंध का आरोप लगाकर कोर्ट में केस फाइल करता है । लेकिन प्रामाणिक सबूतों के माध्यम से कोर्ट में अमला और जैफ की बेगुनाही का खुलासा हो जाता है, साथ ही साथ तरंग का मुखौटा भी उतर जाता है । यहाँ तरंग को तलाक न देते हुए अमला ने अपना प्रतिरोध को ज़ाहिर किया है । वह कहती है – "क्यों दूँ मैं उसे तलाक ? इतने साल उसने मुझसे धोखा किया, मुझे सताया । सही बात नहीं बताई । मुझे अँधेरे में रखा । और अब जब, वह तलाक माँगता है, तो मैं हाँ कर दूँ ? क्यों ? क्योंकि वह मर्द है ? हमेशा उसी की मर्ज़ी चलेगी ? नहीं देती मैं तलाक । सड़ा करे वह जीवन-भर ।"[ii] उसकी यह मानसिकता अपने कटु जीवन-अनुभवों का ही परिणाम है।

अमला की दोस्त है – नीरा - शादी-शुदा, पति-परायणा नारी । दो लड़कियों की माँ । पति के लैंगिक मनोवैकृतों का शिकार । वैवाहिक जीवन से पूर्णतया अतृप्त होते हुए भी अपनी शादी तोड़ने के लिए वह तैयार नहीं थी । अपनी बेटियों के लिए सब कुछ सहने के बावजूद भी घर संभालने में वह पराजित हुई । जिस दिन रात को नीरा की बेटियों ने पिता की लैंगिक मनोवैकृत को देखा उस रात से नीरा की ज़िंदगी का बहाव रुक गया । अपने पति और दोनों बेटियों की दृष्टि में कुसूरवार सिर्फ नीरा हुआ । सबसे दुखद बात यह था कि बेटियाँ भी सच जानने की कोशिश किए बगैर पिता का साथ दिया । इन हालातों के फलस्वरूप नीरा आत्महत्या करने

की कोशिश करती है जो उसे मनोचिकित्सक के पास पहुँचाती है । बच्चों के लिए अपने ऊपर हो रहे सारे अत्याचारों को सहती भारतीय नारी का मूर्त रूप है – नीरा । नीरा के माध्यम से स्त्री जीवन की विवशता को लेखिका ने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अपने बच्चों के लिए, विशेषकर अपनी बेटियों के लिए अपने ऊपर हो रहे सारे अत्याचारों को सहती अनेक स्त्रियाँ हमारे समाज में आज भी मौजूद है । भारतीय समाज में किसी न किसी तरीके से अपने परिवार को संभालकर रखने का दायित्व हमेशा स्त्री के कंधों पर है । नीरा की कहानी सुनकर सुदर्शन, जो अमला के दोस्त है, इस प्रकार पूछता है – "इस बिना (आधार) पर मिसिस दाते उसे छोड़ भी सकती है ।"[iii] इसके लिए अमला की जवाब इस प्रकार है - "दो बेटियों की माँ से यह अपेक्षा करना ज़्यादती होगी, हमारे समाज में ।"[iv] लेकिन इस समस्या का और एक पहलू भी है । नीरा की हालत को सिर्फ उसकी विवशता कहकर छोड़ नहीं सकती । नीरा की समस्या पर चर्चा करते हुए जब अमला पूछती है "यह कब तक चलेगा, रंभा ?"[v] तब रंभा की जवाब इस प्रकार है- "जब तक वह चलाएगी ।"[vi] यह एक महत्वपूर्ण कथन है । इस कथन के ज़रिए लेखिका यह बताना चाहती है कि स्त्रियों के प्रति हो रहे अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह स्वयं स्त्रियों को ही करना चाहिए । अपनी बेटियों की भलाई के लिए नीरा ने ज़िंदगी से जो समझौता किया, यह दरअसल बच्चों के मन में बुरा असर पैदा किया । ज़िंदगी से इस प्रकार का समझौता बच्चों को यह सीख देता है कि स्त्री को हमेशा सहनशील होना चाहिए ।

अमला की पड़ोसिन शीला भी नीरा के समान है जो परिवार के लिए अपने साथ होनेवाली सारी अनीतियों से समझौता करनेवाली भारतीय नारी का प्रतीक है । वह भी पढ़ी-लिखी औरत है । "शीला पढ़ी-लिखी है । ससुराल में बहुओं से नौकरी करवाने का रिवाज़ न होने के कारण घर ही में रहती है ।"[vii] शिक्षित होते हुए भी शीला में प्रतिरोध प्रकट करने की क्षमता नहीं है । शीला का शोषण करनेवाली- उसकी सास है। उसका पति एक निकम्मा मातृभक्त है ।

नीरा और शीला पढ़ी-लिखी होने की वजह से, कम से कम यह समझती हैं कि उनके ऊपर जो हो रही हैं, वह अन्याय है, अत्याचार है । लेकिन बाई की स्थिति भिन्न है । बाई अमला की नौकरानी है । अंधे बच्चे को जन्म देने की दोषी ठहराकर उसका पति उसे छोड़कर बाई की छोटी बहन से शादी करता है । बाई दूसरों के घरों में साफ-सफाई का काम करते हुए, अपने बेटे का इलाज वगैरह के लिए पैसे का इंतज़ाम करती है । इतने अत्याचारों के बावजूद भी वह अपने पति को परमेश्वर मानता है । बीमार पति की सेवा करने के लिए अपना काम-धंधा छोड़कर वह दूसरों से कर्ज़ लेता है । पति की लंबी उम्र के लिए वह माँग भरती है और मंगलसूत्र भी पहनती है । उपन्यास में भारतीय स्त्रियों पर धर्म के बुरे प्रभाव को लेखिका ने बाई के माध्यम से दर्शाया है । बाई पर अमला इस प्रकार रोष प्रकट करती है – "भारतीय नारी ! सीता-सावित्री के नाम पर कान पकड़नेवाली भारतीय नारी.....यह कभी नहीं सुधरेगी । कभी नहीं ।" [viii] स्त्रियों पर संस्कृति, परंपरा और धर्म का गहरा प्रभाव समझने के लिए यह एक उदाहरण है ।

नारी चाहे आधुनिक विचार के हो या पुराने, उन पर प्रेम की अनुभूति और प्रभाव पूर्णतया एक समान होते हैं । प्रेम के ज़रिए नारी को गुलाम बनाया जा सकती है । टाइम पास के लिए प्रेम करनेवाली स्त्रियाँ बहुत कम ही होती है । पुरुष का यह विचार बिल्कुल गलत है कि स्त्री भी उसके समान सब कुछ आसानी से भूल सकती हैं । अमला की सहेली रंभा के मामले में मलय चैटर्जी का भी यह गलत धारणा थी । मलय चैटर्जी शादीशुदा आदमी है जिसके बड़े बच्चे भी है । समाज में उसके ऊँचे ओहदे और मान-सम्मान है । लेकिन रंभा से

रिश्ते बनाते समय ये सब बातें वह भूल जाता है। रंभा भी इससे अनभिज्ञ नहीं थी कि चैटर्जी शादीशुदा है। लेकिन वासना की लालसा के कारण दोनों ये सब बातें भूलते हैं और खूब मज़ा उठाते हैं। पुरुष को बहुत जल्द ही बोरियत महसूस होता है। अमला का विचार इस प्रकार है कि – "और आज जब वह समय आ गया है, तो हर आम पुरुष की तरह, वे पिंड छुड़ाना चाहते हैं। रंभा उन्हें कसे रखना चाहती है, हर आम औरत की तरह।"[ix] चैटर्जी केलिए रंभा उपभोग की चीज़ मात्र थी। मलयालम के विख्यात लेखिका के. आर. मीरा के अनुसार 'पुरुष और स्त्री के प्रेम में भिन्नता है। पुरुष का प्रेम शरीर पर आधारित है, लेकिन स्त्री-प्रेम का आधार मन और आत्मा है।' स्त्री के शरीर से आकर्षण कम होने के साथ पुरुष का प्रेम भी कम हो जाती है। अपवाद की गुंजाइश है तो भी यह एक सच्चाई है जिससे सहमत होना ही पड़ता है।

उपन्यास में लेखिका ने शीला की सास, अस्पताल की मैट्रन, कमला की माँ और शाहिद की खालाजान को पितृसत्तात्मक मानसिकता के प्रतीक के रूप में सामने रखा है। "जिस मस्तिष्क को उसके खुद के नियंत्रण से वंचित रखा जाएगा, वह दूसरों का नियंत्रण प्राप्त करने का प्रयास करके अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करेगा। किसी भी मनुष्य को अपनी खुद की स्वाधीनता न देने का अर्थ है उसकी ऊर्जाओं को गलत दिशा में मोड़ना। जहाँ स्वतंत्रता संभव न हो, वहाँ सत्ता उसका एकमात्र विकल्प बन जाती है। जिन मनुष्यों को अपने खुद के मामले खुद को सुलझाने को नहीं मिलेंगे, वे दूसरों के मामलों में उलझकर अपनी इन इच्छाओं को तुष्ट करेंगे।"[x] यह बात शीला की सास के संदर्भ में सच ही है। अस्पताल की मैट्रन भी इस तरह की औरत है। अपनी स्वतंत्रता का पूरा आनंद उठाकर जीनेवाली औरतों के प्रति उसका गुस्सा उपन्यास में प्रकट है। कमला की माँ और खालाजान में समानता यह है कि वे पुरुषों की सेवा अपना फर्ज़ समझती है। उनके अनुसार स्त्री का जीवन पुरुष के लिए समर्पित है। शाहिद की माँ तलाकशुदा नारी है। अमला को शाहिद की माँ के बारे में बताते हुए शाहिद की खालाजान कहती है : "देखो बिटिया ! लिखना-पढ़ना ही नहीं, औरत को आदमी की जात को सम्हालने का गुर भी सीखना पड़ता है। जो औरत अपने मियाँ को पहचान न ले, उसकी कमज़ोरी जान न ले, वह औरत किस काम की ? ज़रा समझदारी से अगर हमारी बहन काम लेती, तो कुछ न बिगड़ता। ज़रा नर्मी, ज़रा प्यार-दुलार थोड़ा-सा गुस्सा बिल्कुल दाल में नमक बराबर, तब मियाँ की नाक में नुकैल पड़ जाती है। तब वह ता-उम्र दम हिलाता चौखट पर बैठा रहता है, हाँ।"[xi] हमारा समाज हमेशा स्त्रियों से समझौते की माँग करता है। कमला की माँ भी पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता का समर्थक है। अपनी बेटी कमला की आत्महत्या के कारण से अनजान होते हुए भी उसका विचार इस प्रकार है – "कुछ कहा सुनी हो गई होगी। किसमें नहीं होती। ऐं ? या पति ने हाथ उठा दिया होगा। अरे, मरद की जात। हाथ उठ ही जाता है कभी-कभार।"[xii] वह पुत्रियों को अभिशाप और पुत्रों को वरदान मानती है। "अरे औलाद को लेकर ज़िंदगी गुज़ार देती है औरत। और इसने तो बेटा जना था, बेटा ! कितने नसीब से बेटा मिलता है।"[xiii] उसका सोच यह है कि एक बेटा पैदा करने की भाग्य मिलने के बावजूद भी कमला ने आत्महत्या क्यों कर लिया ? कमला की माँ भी अपनी बेटी का अंतर्मन समझने में असमर्थ निकलती है।

अमला की माँ एक पढ़ी-लिखी औरत है। एक कामकाजी महिला है – अध्यापिका है। लेकिन धर्म के बुरे प्रभाव ने उसे आजीवन एक गुलाम बना दिया। एक तरह से अपने परजीवी वृत्तिवाले पति के साथ ज़िंदगी गुज़ारने के लिए उसने धर्म को एक उपाय के रूप में चुन लिया। पुरुषों की अपेक्षा धर्म के प्रति लगाव स्त्रियों में

ज़्यादा दिखाई देती है । इसलिए धार्मिक ठेकेदार पुरुष और अनुयायी स्त्रियाँ होते हैं । अमला की माँ भी धर्म की इस बुरे प्रभाव का शिकार है । अमला की माँ बचपन में अपनी दादी के साथ लगातार एक कीर्तन सुनने जाया करती थी । वहाँ के प्रवचनकार द्वारा कही गयी एक कहानी का प्रभाव अमला की माँ पर देख सकते हैं । उस प्रवचनकार का कहना है –"जो अपना धर्म, अपने कर्तव्य, फिर चाहे वह जो भी हो, अगर पूरी तरह निभाता है ; जहाँ, जिस समय, जिस भी रूप में वह है – चाहे पत्नी है, स्त्री है, पुत्री है, पति है, पिता है, नौकर या मालिक है, जो अपना कार्य उस पद के अनुरूप करता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है । संसार में फिर उसे दुबारा नहीं आना होता ।"[xiv] अमला की माँ अपनी पूरी ज़िंदगी इस प्रवचन के आधार पर जीने का निर्णय लेती है । इसके फलस्वरूप वह अपनी अस्मिता को त्यागकर पत्नी धर्म निभाने का फैसला लेती है । उसके अनुसार उसने जो कुछ अब तक किया है, वह सब उस के लिए हैं । जबकि यह कोई सेवा नहीं बल्कि उसका कर्तव्य है । जीवन में आगे बढ़ने की इच्छा मन में रखनेवाली स्त्रियों के लिए वह एक पथप्रदर्शक नहीं है ।

लेखिका ने इस उपन्यास में विभिन्न तरह से सोचनेवाली स्त्रियों को प्रस्तुत किया है । अमला के दफ्तर के चौबेजी की पत्नी चौबाइन भारतीय समाज के हर एक स्त्री की तरह शादी के बाद मन और तन से बदलनेवाली औरत की प्रतिनिधी है । वह खुद एक पतिपरायण स्त्री ही है । फिर भी युगानुरूप परिवर्तनों को खुले मन से समझने के पक्ष में है । परिवर्तित युग के अनुरूप अपने सोच को परिष्कृत करने में वह हिचकते नहीं । उसके अनुसार 'वैवाहिक जीवन दो खिलाड़ियों के बीच की एक खेल है । शर्त यह है कि, दोनों खिलाड़ियों को खेल के नियमों का पता होना चाहिए । यदि एक खिलाड़ी खेल के नियम नहीं जानते हैं तो, खेल ही बंद कर देना चाहिए । नहीं तो, इधरवाले खिलाड़ी को किसी सधे खिलाड़ी के साथ नया खेल शुरू करना चाहिए । तब तो खेल में मज़ा आता है । नहीं तो कडुवाहट ही मिल पाते हैं' । वह कहते हैं – "जैसा काल, वैसी रीत ।"[xv] उनका मतलब यह है कि यदि अनिवार्य है तो डिवोर्स लेना ही चाहिए । तकलीफ उठाकर जीने की कोई ज़रूरत नहीं ।

उपन्यास में अमला के समान चार सशक्त पात्र हैं – आमिना, अरुणा, कमला की सबसे छोटी बहन और शाहिद की माँ । शाहिद की माँ उपन्यास का प्रत्यक्ष पात्र नहीं है । बल्कि खालाजान और शाहिद की बातों के ज़रिए उपन्यासकार ने इस पात्र का चित्रण किया है । शाहिद की माँ खालाजान की बहन है । शाहिद की माँ ने असफल दांपत्य जीवन से बाहर आ जाने का साहस दिखा दिया । उपन्यास में इस पात्र का महत्व का कारण ही यह हैं । शाहिद की मंगेतर है – आमिना । आमिना अपने भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखनेवाली लड़की है । वह भविष्य के प्रति स्पष्ट समझ रखनेवाली बिंदाज़ लड़की है जो शाहिद के सामने अपने बात रखने में हिचकती नहीं है ।

उपन्यास में आत्मप्रेम और आत्मविश्वास के प्रतीक है अरुणा । वह तलाकशुदा नारी है । एक कामकाजी महिला है – नर्स है । अपने पति के बारे में उसका कहना है कि- "रात -रात भर अपनी गंदगी मुझमें उँडेलता और फिर कूडादान समझकर ठोकर मारकर परे धकेल देता । स्साला ।"[xvi] इसी कारण से उसने अपने पति को छोड़ दिया । उपन्यासकार ने अरुणा के माध्यम से स्त्रियों की लैंगिक स्वतंत्रता की ओर इशारा किया है । उपन्यास के एक संदर्भ में अरुणा के बारे में अमला कहती है - "क्या दबंग महिला है ।"[xvii] वह सच में एक दबंग महिला ही है । उसने अपनी ज़िंदगी पूरे मज़े के साथ जीने का प्रयत्न किया । अरुणा के माध्यम से लेखिका ने यह रेखांकित करने की कोशिश किया है कि यौन स्वतंत्रता केवल पुरुषों के लिए ही नहीं, बल्कि स्त्रियाँ भी इसके हकदार है । अरुणा ने नापसंद ज़िंदगी से बाहर निकलने की साहस दिखा दिया ।

उपन्यास में नि:संतान स्त्रियों का दुख उपन्यासकार ने गुजराती बेन के ज़रिये दिखाया है । मृत कमला के इकलौते बेटे को गोद लेती गुजराती बेन बेऔलाद स्त्रियों के दुख का अंकन करने में पूर्णतया सक्षम निकला है । इस प्रकार उपन्यास के एक अन्य महिला पात्र – प्रोफेसर की पत्नी है । उसका नाम उपन्यास में नहीं । वह अनेक अनाम भारतीय महिलाओं की प्रतिनिधी है जो जीवनभर अपने पिता, पति और पुत्र के नाम से पहचानने को अभिशप्त है । दुख की बात यह है कि ज़िंदगी भर पति के पहचान पर जीना वह अपनी भाग्य महसूस करती है । अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के बारे में वह सजग नहीं है । समाज के शिक्षित महिला वर्ग की प्रतिनिधी के रूप में कमला की डॉक्टर भी उपन्यास में प्रस्तुत है ।

अमला और कमला – पूरा उपन्यास इन्हीं दो महिलाओं के ईर्द-गिर्द घूमता है । इसमें अमला की कहानी तो पहले ही बताया । अब कमला कौन है ? उसकी कहानी क्या है ? क्यों उसने आत्महत्या की ? ये सारे सवाल बाकी है । कमला चार लड़कियोंवाले गरीब परिवार की बड़ी बेटी थी । गरीब परिवार, बड़ी बेटी, तीन छोटी बहिन – उसके नापसंद शादी के लिए ये सारे कारण काफी थी । पढ़ने-लिखने की शौक कमला में बहुत थी । लेकिन उसकी परिस्थितियाँ उसे एक पत्नी बना दिया । एक बेटे का माँ बना दिया । उसकी इच्छा के विरुद्ध ये सब हुआ । इसके परिणाम स्वरूप वह 'पोस्ट-पारटम सायकोसिस' का शिकार बन गई । उपन्यास में लिखा है : "कमला की मौत के पीछे कोई एक व्यक्ति होता, जिसे ज़िम्मेदार ठहराकर, उसे सज़ा दी जा सकती, कम से कम उसे कोसा जा सकता, तो.....पर ज़िम्मेदार थे हालात । और वह भी कैसे.....उसके मायके का दैन्य, पिता की मज़बूरी, समाज में बदनामी का डर, बहनों केलिए दहेज का अभाव, पति में प्रेम और सहानुभूति का न होना, संवेदनशून्य पड़ोसी और स्वयं कमला का स्वभाव....."[xviii] बीमारी की स्थिति तक अपने आप को पहुँचाने में वह भी ज़िम्मेदार है । कमला अपनी पूरी ज़िंदगी भाग्य को कोसती बिताती है । अपनी हालात से लड़ने की कोई कोशिश उसकी तरफ से नहीं हुई । कमला की सबसे छोटी बहन के माध्यम से उसका स्वभाव ज़्यादातर स्पष्ट हो जाती है । कमला के बारे में जानने की उद्देश्य से जब अमला कमला के घर पहुँचती है तो उसकी मुलाकात कमला की छोटी बहिन से होती है । कमला के घर पर हुई वार्तालाप के दौरान कमला की बहन मौन रही, लेकिन जब अमला जाने के लिए बाहर निकलती तो उसने अपनी बात सामने रख देती है कि उसे अपनी जीजाजी को याने कमला की पति पंसारी को एक संदेश पहुँचाना है । वह कहती है – "उनसे कहिएगा कि मैं उनके साथ शादी करने को तैयार हूँ ।"[xix] अमला पहले इस बात से अचरज हुई । पर बाद में उससे हुई बातों से समझ गयी कि वह जो कुछ कह रही है ठीक है । पढ़ाई-लिखाई में उसका मन नहीं है । वह जानती है कि उसकी बड़ी बहिनों की शादी जल्द न होनेवाली है । तो उसका सोच इस प्रकार है कि जीजाजी के साथ शादी से ही सही इस गरीबी और यातनाओं से बाहर तो निकल सकती है । उसका कहना है कि "मैं नहीं मरने की मुझे जीना है । खूब जीना है । मुझे जानना है कि सुख कैसा होता है । मज़े करने हैं मुझे । मर तो मैं यहाँ जाऊँगी । मैडम, आप ज़रूर जीजाजी से कहें – मैं तैयार हूँ ।"[xx] उस लड़की में जीने की ललक है । जिजीविषा है उसमें । अपनी हालात से समझौता करने के लिए वह तैयार नहीं है । वह अपनी भाग्य को कोसती नहीं, वरन् उससे संघर्ष करने की कोशिश करती है ।

इस प्रकार यह उपन्यास समाज के पितृसत्तात्मकता का द्वार खोलता है । इस समाज में तरह-तरह की महिलाएँ मौजूद है । उन सब के सोच-विचार में अंतर है । ज़िंदगी को देखने की उनका दृष्टिकोण भिन्न है । सबकी अपनी समस्याओं को निपटाने की तरीकें अलग है । कुछ तो भाग्य को कोसते हुए ज़िंदगी बिगाड़ देती है ।

कुछ इससे संघर्ष करने का हिम्मत दिखाती है। विभिन्न नज़रिया अपनानेवाले पुरुष भी इस उपन्यास के मुख्य पात्र है। लेकिन इस उपन्यास के ज़रिए उपन्यासकार का उद्देश्य यह बताना है कि स्त्रियों की ज़िंदगी सफल बनाने या बर्बाद करने की उत्तरदायी खुद स्त्रियाँ ही है। पुरुष सच में स्त्रियों की गुलामी स्वभाव का फायदा उठाता है। स्त्रियों को अपनी हालातों के अनुरूप ज़िदगी को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक परिवर्तनों को अपनाना चाहिए। हार मान लेना आसान तरीका है। संघर्ष करने के लिए साहस चाहिए। अमला बनना है या कमला, विकल्प स्वयं स्त्रियों को ही चुनना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

[i] Ranade Hemangini A , Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.7.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ. 7

[ii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.187.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 187

[iii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.33.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 33

[iv] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.33.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 33

[v] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.26.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 26

[vi] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.26.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005 , पृ 26

[vii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.67.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 67

[viii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.69.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 69

[ix] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.73.
रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 73

[x] Mill John Stuart, The Subjection of Women, (Mill John Stuart, Trans) Merut, Samvad Prakasahan, 2002, P.102. मिल जॉन स्टुआर्ट, द सब्जेक्शन ऑफ विमैन, (मिल जॉन स्टुआर्ट, आनुवाद) मेरठ, संवाद प्रकाशन, 2002, पृ 102

[xi] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.99.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 99

[xii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.173.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 173

[xiii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.173.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 173

[xiv] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.190.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 190

[xv] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.147.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 147

[xvi] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.129.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 129

[xvii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.54.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 5

[xviii] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.212.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 212

[xix] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.177.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 177

[xx] Ranade Hemangini A, Ek Stree Ki Atmahatya, Medha Books, 2005, P.178.

रानडे हेमांगिनी अ, एक स्त्री की आत्महत्या, मेधा बुक्स, 2005, पृ 178

****